इकाई 7 हल् सन्धि – भाग 2

इकाई की रूपरेखा

7.0 उद्देश्य

इस इकाई के अध्ययन के पश्चात् आप –

- हल् सन्धि के **मोऽनुस्वारः**(8.3.23) सूत्र से लेकर **पदान्ताद्वा**(8.1.79) तक के सूत्रों के सूत्रार्थ एवं उदाहरणादि से परिचित हो सकेंगे।
- हल् सन्धि के अन्तर्गत श्चुत्व, ष्टुत्व, जश्त्व, चर्त्व, परसवर्ण, पूर्वसवर्ण, अनुनासिक और अनुस्वार, छत्वसन्धि के स्थलों में सन्धि एवं सन्धिविच्छेद करना तथा उसकी प्रक्रिया को जान सकेंगे।
- अनुस्वार, मत्व विधान, नत्व विधान एवं कुक्, टुक्, ङुट्, णुट्, नुट्, सुट् और तुक् आदि आगमों से परिचित हो सकेंगे।
- आगमों के कारण होने वाले परिवर्तनों का ज्ञान प्राप्त कर सकेंगे।
- आगमों के सन्दर्भ में परिभाषासूत्रों की क्या उपयोगिता है? यह भी जान सकेंगे।
- त्रिपादिस्थ सूत्रों के उत्तरोत्तर असिद्धत्व एवं उनके पूर्वापर प्रवृत्ति को भी समझ सकेंगे।

7.1 प्रस्तावना

इस इकाई से पूर्व आपने अच् सन्धि की दो इकाइयों तथा हल् सन्धि की एक इकाई का भी भली-भाँति अध्ययन किया है। दो हलों (अथवा एक हल् व एक अच्) के मध्य होने वाली हल् सन्धि के कतिपय अंश आप पिछली इकाई में पढ चुके हैं। हल् सन्धि के शेषांश का अध्ययन आप प्रस्तुत इकाई में करने जा रहे हैं। इस प्रकार प्रस्तुत इकाई में आप श्चुत्व, ष्टुत्व, जश्त्व, चर्त्व, परसवर्ण, पूर्वसवर्ण, अनुनासिक और अनुस्वार, छत्व आदि सन्धियों के अध्ययन के साथ ही कतिपय आगमों से भी परिचित होंगे।

7.2 हल् सन्धि –मोऽनुस्वारः सूत्र से पदान्ताद्वा सूत्र पर्यन्त।

सूत्र – मोऽनुस्वारः(8.3.23)

वृत्ति – मान्तस्य पदस्यानुस्वारो हलि।

सूत्रार्थ – हल् परे रहते मकारान्त पद के अन्तिम मकार के स्थान पर अनुस्वार आदेश होता है।

उदाहरण – हरिं वन्दे।

व्याख्या – यह अनुस्वारविधायक विधिसूत्र है। इस सूत्र में दो पद हैं। 'मः' षष्ठी एकवचन और 'अनुस्वारः' यह प्रथमा एकवचन का पद है। सूत्र में षष्ठ्यन्त मः पद से निर्दिष्ट होने के कारण **अलोऽन्त्यस्य** की सहायता से मान्त पद के अन्तिम मकार के स्थान पर अनुस्वार प्राप्त हुआ।

रूपसिद्धि –

हरिं वन्दे – हरिम्+वन्दे इस स्थिति में हरिम् इस द्वितीयान्त मान्त (मकार अन्त वाले) पद से वन्दे घटक वकाररूपी हल् के परे होने के कारण **मोऽनुस्वारः** सूत्र से मकार के स्थान पर अनुस्वार होकर हरिं वन्दे रूप सिद्ध हुआ।

सूत्र – नश्चापदान्तस्य झलि(8.3.24)

वृत्ति – नस्य मस्य चापदान्तस्य झल्यनुस्वारः। झलि किम् ? मन्यते।

सूत्रार्थ –झल् परे रहते अपदान्त नकार और मकार के स्थान पर अनुस्वार होता है।

उदाहरण – यशांसि। आक्रंस्यते।

व्याख्या – यह अनुस्वारविधायक विधिसूत्र है। इस सूत्र में चार पद हैं। 'नः' षष्ठी एकवचन, 'च' अव्ययपद, 'अपदान्तस्य' षष्ठी एकवचन और 'झलि' यह सप्तमी एकवचन का पद है। मः और अनुस्वारः इन दोनों पदों की अनुवृत्ति आती है। यह सूत्र अपदान्त में भी नकार एवं मकार के स्थान पर अनुस्वार करता है। सूत्र में झल् परे रहते ही अनुस्वार होगा ऐसा कहने से मन्यते (मन्+यते) यहाँ पर अनुस्वार नहीं हुआ।

रूपसिद्धि –

यशांसि – यशान् +सि इस स्थिति में अपदान्त यशान् घटक अन्तिम नकार से झल् (सि घटक सकार) के परे रहते **नश्चापदान्तस्य झलि** सूत्र से न् के स्थान पर अनुस्वार होकर यशांसि रूप सिद्ध हुआ।

आक्रंस्यते – आक्रम् +स्यते इस स्थिति में अपदान्त आक्रम् घटक मकार से झल् (स्यते घटक सकार) के परे रहते **नश्चापदान्तस्य झलि** सूत्र से म् के स्थान पर अनुस्वार होकर आक्रंस्यते रूप सिद्ध हुआ।

सूत्र – अनुस्वारस्य ययि परसवर्णः(8.4.58)

वृत्ति – स्पष्टम्।

सूत्रार्थ – यय् परे रहते अनुस्वार के स्थान में परसवर्ण आदेश होता है।

उदाहरण – शान्तः।

व्याख्या – यह परसवर्णविधायक विधिसूत्र है। इस सूत्र में तीन पद हैं। 'अनुस्वारस्य' षष्ठी एकवचन, 'ययि' सप्तमी एकवचन और 'परसवर्णः' यह प्रथमा एकवचन का पद है। यय् प्रत्याहार के अन्तर्गत ऊष्मवर्णों (श्,ष्,स्,ह्) को छोड़कर शेष व्यञ्जन आते हैं। सूत्र का अर्थ सूत्र से ही स्पष्ट है अतः वृत्तिकार वृत्ति में लिखते हैं – स्पष्टम्।

रूपसिद्धि –

शान्तः – शाम्+त इस स्थिति में अपदान्त शाम् घटक मकार से झल् (त घटक) तकार के परे रहते म् के स्थान पर अनुस्वार हुआ। शां+त इस स्थिति में **अनुस्वारस्य ययि परसवर्णः** सूत्र से यय् तकार के परे रहते अनुस्वार को परसवर्ण नकार (त का सवर्णी नकार) हुआ। शान्+त इस स्थिति में वर्णसम्मेलन तथा स्वादिकार्य होकर शान्तः रूप सिद्ध हुआ।

सूत्र – वा पदान्तस्य(8.4.59)

वृत्ति – पदान्तस्यानुस्वारस्य ययि परे परसवर्णो वा स्यात्।

सूत्रार्थ – यय् परे रहते पदान्त अनुस्वार के स्थान में विकल्प से परसवर्ण आदेश होता है।

उदाहरण – त्वङ्करोषि, त्वं करोषि।

व्याख्या – यह परसवर्णविधायक विधिसूत्र है। इस सूत्र में दो पद हैं। 'वा' अव्ययपद तथा 'पदान्तस्य' यह षष्ठी एकवचन का पद है। अनुस्वारस्य, ययि और परसवर्णः पदों की अनुवृत्ति आती है। यह सूत्र पूर्वसूत्र का अपवाद है। पदान्त में अनुस्वार को परसवर्ण विकल्प से होगा।

रूपसिद्धि –

त्वङ्करोषि, त्वं करोषि – त्वम्+करोषि स्थिति में त्वम् इस मान्त (मकार अन्त वाले) पद से करोषि घटक ककाररूपी हल् परे होने के कारण **मोऽनुस्वारः** सूत्र से मकार के स्थान पर अनुस्वार हुआ। त्वं+करोषि इस स्थिति में यय् करोषि घटक ककार के परे रहते पदान्त में जो अनुस्वार उसे **वा पदान्तस्य** सूत्र से विकल्प से परसवर्ण ङ् हुआ। त्वङ्+करोषि इस स्थिति में वर्णसम्मेलन करके त्वङ्करोषि रूप सिद्ध हुआ। जिस पक्ष में अनुस्वार को परसवर्ण नहीं होगा उस पक्ष में त्वं करोषि यह अनुस्वारयुक्त रूप बनेगा।

सूत्र – मो राजि समः क्वौ(8.3.25)

वृत्ति – क्विबन्ते राजतौ परे समो मस्य म एव स्यात्।

सूत्रार्थ – क्विबन्त राज् धातु परे रहते सम् के मकार के स्थान पर मकार ही होता है।

उदाहरण – सम्राट्।

व्याख्या – यह मकारविधायक विधिसूत्र है। इस सूत्र में चार पद हैं। 'मः' प्रथमा एकवचन, 'राजि' सप्तमी एकवचन, 'समः' षष्ठी एकवचन और 'क्वौ' यह सप्तमी एकवचन का पद है। यह सूत्र **मोऽनुस्वारः** का अपवादसूत्र है। सम् यह अव्यय है अतः इससे स्वादि प्रत्ययों की उत्पत्ति एवं उनके लोप होने से सम् पदसंज्ञक हुआ। सम्+राट् यहाँ पर हल् परे रहते **मोऽनुस्वारः** से मकार को अनुस्वार प्राप्त है, जिसे बाधकर यह सूत्र मकार के स्थान पर मकार ही हो (अनुस्वार न हो) ऐसा विधान करता है।

रूपसिद्धि –

सम्राट् – सम्+राट् इस स्थिति में पदान्त में स्थिति सम् के मकार को हल् परे रहते **मोऽनुस्वारः** से अनुस्वार प्राप्त है। जिसे बाधकर **मो राजि समः क्वौ** से क्विबन्त राज् धातु सम्बन्धी राट् के परे रहते मकार के स्थान पर मकार का ही विधान हुआ। सम्+राट् इस स्थिति में वर्णसम्मेलन करके सम्राट् यह रूप सिद्ध हुआ।

सूत्र – हे मपरे वा(8.3.26)

वृत्ति – मपरे हकारे परे मस्य मो वा।

सूत्रार्थ – मकार के स्थान पर मकार विकल्प से होता है, मपरक हकार परे हो तो।

उदाहरण – किम् ह्मलयति, किं ह्मलयति।

व्याख्या – यह मकारविधायक विधिसूत्र है। इस सूत्र में तीन पद हैं। 'हे' और 'मपरे' ये दोनों सप्तमी एकवचन के तथा वा यह अव्यय पद है। यह सूत्र भी **मोऽनुस्वारः** का वैकल्पिक अपवाद है। हे मपरे पदों का अर्थ है मकार पर में हो जिसके ऐसे हकार के परे रहते।

रूपसिद्धि –

किम् ह्मलयति, किं ह्मलयति – किम्+ह्मलयति इस स्थित में किम् के मकार के स्थान पर **मोऽनुस्वारः** से अनुस्वार प्राप्त है। जिसे बाधकर **हे मपरे वा** सूत्र से ह्मलयति घटक मपरक हकार के परे रहते किम् के मकार को विकल्प से मकार होकर किम् ह्मलयति रूप सिद्ध हुआ। जिस पक्ष में मकार नहीं होगा उस पक्ष में अनुस्वार होकर किं ह्मलयति रूप सिद्ध होगा।

वार्तिक – यवलपरे यवला वा।

अर्थ – यवल (यकार, वकार एवं लकार) परक हकार परे हो तो मकार के स्थान पर विकल्प से क्रमशः अनुनासिक यकार, वकार एवं लकार होता है।

उदाहरण – किंय्ह्यः, किं ह्यः। किंव्ह्वलयति, किं ह्वलयति। किंल् ह्लादयति, किं ह्लादयति।

रूपसिद्धि –

किंय्ह्यः, किं ह्यः – किम्+ह्यः इस स्थिति में किम् के मकार को प्राप्त अनुस्वार को बाधकर **यवलपरे यवला वा** इस वार्तिक से यवल (यकार) परक हकार परे रहते किम् के मकार के स्थान पर विकल्प से अनुनासिक य् हुआ। किय्+ह्यः इस स्थिति में

वर्णसम्मेलन करके किंय्ह्यः रूप सिद्ध हुआ। जिस पक्ष में मकार को यकार नहीं होगा उस पक्ष में अनुस्वार होकर किं ह्यः रूप सिद्ध होगा।

किंव्ह्वलयति, किं ह्वलयति – किम् +ह्वलयति इस स्थिति में किम् के मकार को प्राप्त अनुस्वार को बाधकर **यवलपरे यवला वा** इस वार्तिक से यवल (वकार) परक हकार परे रहते किम् के मकार के स्थान पर विकल्प से अनुनासिक व् हुआ। किंव्+ह्वलयति इस स्थिति में वर्णसम्मेलन करके किंव्ह्वलयति रूप सिद्ध हुआ। जिस पक्ष में मकार को वकार नहीं होगा उस पक्ष में अनुस्वार होकर किं ह्वलयति रूप सिद्ध होगा।

किंल् ह्लादयति, किं ह्लादयति – किम्+ह्लादयति इस स्थिति में किम् के मकार को प्राप्त अनुस्वार को बाधकर **यवलपरे यवला वा** इस वार्तिक से यवल (लकार) परक हकार परे रहते किम् के अन्तिम मकार के स्थान पर विकल्प से अनुनासिक ल् हुआ। किंल् +ह्लादयति इस स्थिति में वर्णसम्मेलन करके किंल्ह्लादयति रूप सिद्ध हुआ। जिस पक्ष में मकार को लकार नहीं होगा उस पक्ष में अनुस्वार होकर किं ह्लादयति रूप सिद्ध होगा।

सूत्र – नपरे नः(8.3.27)

वृत्ति – नपरे हकारे मस्य नो वा।

सूत्रार्थ – नपरक हकार के परे रहते मकार के स्थान पर विकल्प से नकार होता है।

उदाहरण – किन् ह्नुते, किं ह्नुते।

व्याख्या – यह सूत्र नकारविधायक विधिसूत्र है। इस सूत्र में दो पद हैं। 'नपरे' सप्तमी एकवचन और 'नः' यह प्रथमा एकवचन का पद है। यह सूत्र भी **मोऽनुस्वारः** का वैकल्पिक अपवादशास्त्र है। नपरे का अभिप्राय है कि नकार पर वाला।

रूपसिद्धि –

किन् ह्नुते, किं ह्नुते – किम्+ह्नुते इस स्थिति में किम् के मकार को प्राप्त अनुस्वार को बाधकर **नपरे नः** सूत्र से ह्नुते घटक नपरक हकार परे होने के कारण किम् के मकार के स्थान पर विकल्प से नकार आदेश होकर किन् ह्नुते रूप सिद्ध हुआ। जिस पक्ष में मकार को नकार नहीं होगा उस पक्ष में अनुस्वार होकर किं ह्नुते रूप बनेगा।

सूत्र – आद्यन्तौ टकितौ(1.1.46)

वृत्ति – टित्कितौ यस्योक्तौ तस्य क्रमादाद्यन्तावयवौ स्तः

सूत्रार्थ – टित् और कित् जिससे विहित होते हैं, उसके क्रमशः आद्यवयव तथा अन्तावयव होते हैं।

व्याख्या – यह परिभाषासूत्र है। इस सूत्र में दो पद हैं। 'आद्यन्तौ' और 'टकितौ' ये दोनों ही प्रथमा द्विवचन के पद हैं। जिसमें टकार की इत्संज्ञा हुई हो वह टित् तथा जिसमें ककार की इत्संज्ञा हुई हो वह कित् कहलाता है। जिनसे टित् और कित् होते

हैं उनका टित् आद्यवयव तथा कित् अन्तावयव होता है। यह परिभाषासूत्र है अतः यह विधिसूत्रों का उपकारक है।

सूत्र – ङ्णोः कुक् टुक् शरि(8.3.28)

वृत्ति – वा स्तः।

सूत्रार्थ – शर् (श्,ष्,स्) परे रहते ङकार को कुक् तथा णकार को टुक् आगम विकल्प से होता है।

व्याख्या – यह विधिसूत्र है। इस सूत्र में तीन पद हैं। 'ङ्णोः 'षष्ठी एकवचन, 'कुक् टुक्' प्रथमा एकवचन और 'शरि' यह सप्तमी एकवचन का पद है। इस सूत्र से विहित कुक् एवं टुक् में उकार एवं ककार (उक्) की इत्संज्ञा एवं लोप होकर क्रमशः क् तथा ट् शेष रहता है अतः शेष जो कुक् का क् और टुक् का ट् वे कित् कहलायेंगे। कित् होने के करण **आद्यन्तौ टकितौ** सूत्र की सहायता से ये ङकार एवं णकार के अन्त में विहित होंगे।

वार्तिक – **चयो द्वितीयाः शरि पौष्करसादेरिति वाच्यम्।**

अर्थ – शर् (श्,ष्,स्) परे रहते चय् (क्,च्,ट्,त्,प्) के स्थान पर वर्गों के द्वितीय वर्ण (ख्,छ्,ठ्,थ्,फ्) विकल्प से होते हैं।

उदाहरण – प्राङ्ख् षष्ठः, प्राङ्क्षष्ठः, प्राङ्षष्ठः। सुगण्ठ् षष्ठः, सुगण्ट् षष्ठः, सुगण् षष्ठः।

रूपसिद्धि –

प्राङ्ख् षष्ठः, प्राङ् क्षष्ठः, प्राङ् षष्ठः – प्राङ्+षष्ठ इस स्थिति में प्राङ् के ङकार से परे षष्ठ घटक षकार शर् है अतः **आद्यन्तौ टकितौ** की सहायता से **ङ्णोः कुक् टुक् शरि** सूत्र से ङकार के अन्त में विकल्प से कुक् का आगम हुआ। प्राङ्+कुक्+षष्ठ इस स्थिति में कुक् के अन्तिम क् की **हलन्त्यम्** से तथा ककारोत्तरवर्ती अनुनासिक उकार की **उपदेशेऽजनुनासिक इत्** से इत्संज्ञा हुई। इत्संज्ञक उ और क् का **तस्य लोपः** से लोप हुआ। प्राङ्+क् +षष्ठ इस स्थिति में षष्ठ घटक षकाररूपी शर् के परे रहते **चयोः द्वितीया शरि पौष्करसादेरिति वाच्यम्** इस वार्तिक से चय् आगम हुआ। कुक् के क् को विकल्प से इस वर्ग का द्वितीय वर्ण ख् हुआ। प्राङ्+ख्+षष्ठ इस स्थिति में वर्णसम्मेलन तथा स्वादिकार्य होकर प्राङ्ख् षष्ठः रूप सिद्ध हुआ। जिस पक्ष में चय् क् को द्वितीय वर्ण ख् नहीं होगा उस पक्ष में वर्णसम्मेलन होने से प्राङ्क्षष्ठः रूप बनेगा और जिस पक्ष में कुक् का आगम ही नहीं होगा उस पक्ष में प्राङ् षष्ठः रूप बनेगा।

सुगण्ठ् षष्ठः, सुगण्ट् षष्ठः, सुगण् षष्ठः – सुगण्+षष्ठ इस स्थिति में सुगण् के अन्तिम णकार से परे षष्ठ घटक आदि षकार शर् है अतः **आद्यन्तौ टकितौ** इस सूत्र की सहायता से **ङ्णोः कुक्टुक् शरि** से णकार के अन्त में विकल्प से टुक् आगम हुआ। सुगण्+टुक्+षष्ठ इस स्थिति में टुक् के उकार एवं ककार की इत्संज्ञा तथा लोप होकर सुगण् +ट्+षष्ठ इस स्थिति में षष्ठ घटक षकाररूपी शर् के परे रहते **चयोः द्वितीया शरि पौष्करसादेरिति वाच्यम्** इस वार्तिक से चय् आगम हुआ। टुक्

के ट् को विकल्प से इस वर्ग का द्वितीयवर्ण ठ् हुआ। सुगण्+ठ्+षष्ठ इस स्थिति में वर्णसम्मेलन तथा स्वादिकार्य होकर सुगण्ठ् षष्ठः रूप सिद्ध हुआ। जिस पक्ष में चय् ट् को द्वितीय वर्ण ठ् नहीं होगा उस पक्ष में वर्णसम्मेलन होने से सुगण्ट् षष्ठः रूप बनेगा और जिस पक्ष में टुक् का आगम ही नहीं होगा उस पक्ष में सुगण् षष्ठः रूप बनेगा।

सूत्र – डः सि धुट्(8.3.29)

वृत्ति – डात्परस्य सस्य धुड् वा।

सूत्रार्थ – डकार से परे सकार को विकल्प से धुट् आगम होता है।

उदाहरण – षट्त्सन्तः, षट् सन्तः।

व्याख्या – यह धुट् आगम विधायक विधिसूत्र है। इस सूत्र में तीन पद हैं। 'डः' पञ्चमी एकवचन, 'सि' सप्तमी एकवचन और 'धुट्' यह प्रथमा एकवचन का पद है। सूत्रस्थ डः पद पञ्चम्यन्त है अतः **तस्मादित्युत्तरस्य** इस परिभाषासूत्र की सहायता से डकार से अव्यवहित उत्तर सि को ही धुट् का आगम होगा। धुट् में उकार एवं टकार की इत्संज्ञा एवं लोप होने से धकार शेष रहता है तथा टित् होने से यह सकार के आदि में होता है।

षट्त्सन्तः, षट् सन्तः – षड्+सन्त इस स्थिति में षड् के डकार से अव्यवहित पर में सकार है अतः **आद्यन्तौ टकितौ** की सहायता से **डः सि धुट्** सूत्र से सकार के आदि में विकल्प से धुट् आगम हुआ। षड्+धुट्+सन्त इस स्थिति में धुट् के उकार एवं ट् की इत्संज्ञा और लोप होकर षड्+ध्+सन्त इस स्थिति में **खरि च** से खर् (सन्त घटक सकार) के परे रहते धकार के स्थान पर चर् तकार हुआ। षड्+त्+सन्त इस स्थिति में पुनः **खरि च** तकार के परे रहते षड् के डकार के स्थान पर चर् टकार हुआ। षट्+त्+सन्त इस स्थिति में वर्णसम्मेलन तथा स्वादिकार्य होकर षट्त्सन्तः रूप सिद्ध हुआ। जिस पक्ष में धुट् आगम नहीं होगा उस पक्ष में षड् के डकार को चर् होकर षट् सन्तः रूप बनेगा।

सूत्र – नश्च(8.3.30)

वृत्ति – नान्तात्परस्य सस्य धुड् वा।

सूत्रार्थ – नान्त (नकार हो अन्त में जिसके) से परे सकार को विकल्प से धुट् का आगम होता है।

उदाहरण – सन्त्सः, सन्सः।

व्याख्या – यह धुट् आगम विधायक विधिसूत्र है। इस सूत्र में दो पद हैं। 'नः' पञ्चमी एकवचन तथा 'च' यह अव्यय पद है। सि, धुट् और वा पदों की अनुवृत्ति आती है। धुट् के टित् होने से वह सकार के आदि में (आद्यवयव) होगा।

रूपसिद्धि –

सन्त्सः, सन्सः – सन्+स इस स्थिति में सन् इस नान्त से परे सकार को **नश्च** सूत्र से विकल्प से धुट् आगम हुआ। धुट् के उकार और टकार की इत्संज्ञा तथा लोप होकर सन्+ध्+स इस स्थिति में **खरि च** सकार के परे रहते धकार के स्थान पर

तकार आदेश हुआ। सन्+त्+स इस स्थिति में वर्णसम्मेलन तथा स्वादिकार्य होकर सन्त्सः रूप सिद्ध हुआ। जिस पक्ष में धुट् नहीं होगा उस पक्ष में सन्सः रूप बनेगा।

सूत्र – शि तुक्(8.3.31)

वृत्ति – पदान्तस्य नस्य शे परे तुग्वा।

सूत्रार्थ – शि परे रहते पदान्त नकार को विकल्प से तुक् का आगम होता है।

उदाहरण – सञ्छम्भुः, सञ्च्छम्भुः, सञ्च्शम्भुः, सञ्शम्भुः।

व्याख्या – यह तुक् आगम विधायक विधिसूत्र है। इस सूत्र में दो पद हैं। 'शि' सप्तमी एकवचन और 'तुक्' यह प्रथमा एकवचन का पद है। तुक् में तकार शेष रहता है। तुक् ककार की इत्संज्ञा होने से कित् है अतः नान्त पद का अन्तावयव होगा।

रूपसिद्धि –

सञ्छम्भुः, सञ्च्छम्भुः, सञ्च्शम्भुः, सञ्शम्भुः – सन्+शम्भु इस स्थिति में नान्त पद सन् से परे शम्भु घटक शकार को **आद्यन्तौ टकितौ** की सहायता से **शि तुक्** सूत्र से विकल्प से तुक् आगम हुआ। तुक् के उकार एवं ककार की इत्संज्ञा व लोप होकर सन्+त्+शम्भु इस स्थिति में **स्तोः श्चुना श्चुः** से शम्भु घटक शकार के साथ योग होने के कारण तकार को श्चुत्व चकार हुआ। सन्+च्+शम्भु इस स्थिति में पुनः **स्तोः श्चुना श्चुः** से सन् के नकार से परे चकार का योग होने के कारण नकार को श्चुत्व ञकार हुआ। सञ्+ च्+शम्भु इस स्थिति में **शश्छोऽटि** सूत्र से झय् चकार से परे शम्भु के शकार के स्थान पर विकल्प से छकार हुआ। सञ्+च्+छम्भु इस स्थिति में हल् सञ् के ञकार से परे झर् चकार का **झरो झरि सवर्णे** से विकल्प से लोप हुआ। सञ्+छम्भु इस स्थिति में वर्णसम्मेलन तथा स्वादिकार्य होकर प्रथम रूप सञ्छम्भुः सिद्ध हुआ। जिस पक्ष में चकार का लोप नहीं होगा उस पक्ष में सञ्च्छम्भुः रूप बनेगा। जिस पक्ष में शकार को छकार आदेश नहीं होगा उस पक्ष में सञ्च्शम्भुः रूप बनेगा और जिस पक्ष में तुक् आगम नहीं होगा उस पक्ष में सञ्शम्भुः रूप बनेगा।

सूत्र – ङमो ह्रस्वादचि ङमुण् नित्यम्(8.3.32)

वृत्ति – ह्रस्वात्परे यो ङम् तदन्तं यत्पदं तस्मात्परस्याचो ङमुट्।

सूत्रार्थ – ह्रस्व से परे जो ङम् (ङ्,ण्,न्), वह है अन्त में जिसके ऐसा जो पद, उससे परे अच् को नित्य ङमुट् आगम होता है।

उदाहरण – प्रत्यङ्ङात्मा। सुगण्णीशः। सन्नच्युतः।

व्याख्या – यह ङमुट् आगम विधायक विधिसूत्र है। इस सूत्र में पाँच पद हैं। 'ङमः' और 'ह्रस्वाद्' ये दोनों पञ्चमी एकवचन के, 'अचि' सप्तमी एकवचन, 'ङमुट्' प्रथमा एकवचन तथा 'नित्यम्' यह द्वितीया एकवचन का पद हैं। ङम् प्रत्याहार के अन्तर्गत ङ्, ण् और न् ये तीन वर्ण आते हैं। ङमुट् में भी ङम् प्रत्याहार है एवं उट् का योग प्रत्येक वर्ण के साथ होकर ङुट्, णुट् और नुट् ये तीन आगम हो जाते हैं। ङुट्, णुट् और नुट् में उकार एवं टकार की इत्संज्ञा एवं लोप होकर ङ्, ण् तथा न् शेष रहते हैं।

रूपसिद्धि –

प्रत्यङ्ङात्मा – प्रत्यङ्+आत्मा इस स्थिति में प्रत्यङ् घटक यकारोत्तरवर्ती अकार ह्रस्व है और उससे परे ङम् ङकार है अतः ह्रस्व से परे ङम् अन्त वाला पद हुआ प्रत्यङ्। उससे परे अच् आत्मा घटक आकार, उसे **ङमो ह्रस्वादचि ङमुण् नित्यम्** सूत्र से ङमुट् (ङकार से परे अच् होने के कारण ङमुट्) आगम हुआ। ङुट् के अन्तिम टकार एवं उकार की इत्संज्ञा एवं लोप होकर प्रत्यङ्ङ्+आत्मा इस स्थिति में वर्णसम्मेलन करके प्रत्यङ्ङात्मा रूप सिद्ध हुआ।

सुगण्णीशः – सुगण्+ईश इस स्थिति में सुगण् घटक गकारोत्तरवर्ती अकार ह्रस्व है और उससे परे ङम् णकार है अतः ह्रस्व से परे ङम् अन्त वाला पद हुआ सुगण् एवं उससे परे अच् ईश घटक आदि ईकार उसे **ङमो ह्रस्वादचि ङमुण् नित्यम्** से ङमुट् (णकार से परे अच् होने के कारण णुट्) आगम हुआ। णुट् के अन्तिम टकार एवं उकार की इत्संज्ञा एवं लोप होकर सुगण्+ण्+ईश इस स्थिति में वर्णसम्मेलन तथा स्वादिकार्य होकर सुगण्णीशः रूप सिद्ध हुआ।

सन्नच्युतः – सन्+अच्युत इस स्थिति में सन् घटक सकारोत्तरवर्ती अकार ह्रस्व है और उससे परे ङम् नकार है अतः ह्रस्व से परे ङम् अन्त वाला पद हुआ सन् एवं उससे परे अच् अच्युत घटक अकार उसे **ङमो ह्रस्वादचि ङमुण् नित्यम्** से ङमुट् (नकार से परे अच् होने के कारण नुट्) आगम हुआ। नुट् के अन्तिम टकार एवं उकार की इत्संज्ञा एवं लोप होकर सन्+न्+अच्युत इस स्थिति में वर्णसम्मेलन तथा स्वादिकार्य होकर सन्नच्युतः रूप सिद्ध हुआ।

सूत्र – समः सुटि(8.3.5)

वृत्ति – समो रुः सुटि।

सूत्रार्थ – सुट् के परे रहते सम् के मकार के स्थान पर रु आदेश होता है।

व्याख्या – यह रुविधायक विधिसूत्र है। इस सूत्र में दो पद हैं। 'समः' षष्ठी एकवचन और 'सुटि' यह सप्तमी एकवचन का पद है। रु इस पद की अनुवृत्ति आती है। रु में उकार अनुनासिक है अतः उसकी इत्संज्ञा एवं लोप होकर र् शेष बचता है।

सूत्र – अत्रानुनासिकः पूर्वस्य तुवा(8.3.2)

वृत्ति – अत्र रुप्रकरणे रोः पूर्वस्यानुनासिको वा।

सूत्रार्थ – इस रु प्रकरण में रु से पूर्व वर्ण को विकल्प से अनुनासिक होता है।

व्याख्या – यह अनुनासिकविधायक विधिसूत्र है। इस सूत्र में पाँच पद हैं। 'अनुनासिकः' प्रथमा एकवचन और 'पूर्वस्य' षष्ठी एकवचन तथा 'अत्र', 'तु' और 'वा' ये तीनों अव्यय पद हैं। **समः सुटि** सूत्र से विधीयमान रु से पूर्ववर्ण को यह सूत्र अनुनासिक करता है।

सूत्र – अनुनासिकात्परोऽनुस्वारः(8.3.4)

वृत्ति – अनुनासिकं विहाय रोः पूर्वस्मात् परोऽनुस्वारागमः।

सूत्रार्थ – जिस पक्ष में अनुनासिक होता है उसको छोड़कर अन्य पक्ष में रु से पूर्व जो वर्ण उससे परे अनुस्वार का आगम होता है।

व्याख्या – यह अनुस्वार आगम विधायक विधिसूत्र है। इस सूत्र में तीन पद हैं। 'अनुनासिकात्' पञ्चमी एकवचन और 'परः' एवं 'अनुस्वारः' ये प्रथमा एकवचन के पद हैं। यह सूत्र जिस पक्ष में **अत्रानुनासिक पूर्वस्य तु वा** इस सूत्र से अनुनासिक नहीं होता है उस पक्ष में रु से पूर्ववर्ण के बाद अनुस्वार का आगम करता है।

सूत्र – खरवसानयोर्विसर्जनीयः(8.3.15)

वृत्ति – खरि अवसाने च पदान्तस्य रेफस्य विसर्गः।

सूत्रार्थ – खर् अथवा अवसान परे रहते पदान्त में विद्यमान जो रेफ उसे विसर्ग होता है।

व्याख्या – यह विसर्गविधायक विधिसूत्र है। इस सूत्र में दो पद हैं। 'खरवसानयोः' सप्तमी द्विवचन तथा 'विसर्जनीयः' यह प्रथमा एकवचन का पद है। रः इस पद की अनुवृत्ति आती है।

वार्तिक – संपुङ्कानां सो वक्तव्यः।

अर्थ – सम्, पुम् और कान् शब्द सम्बन्धी विसर्ग को सकार होता है।

उदाहरण – सँस्स्कर्ता, संस्स्कर्ता।

रूपसिद्धि –

सँस्स्कर्ता, संस्स्कर्ता – सम्+स्कर्ता इस स्थिति में स्कर्ता घटक सकार सुट् सम्बन्धी होने के कारण **समः सुटि** सूत्र से सम् के मकार के स्थान पर रु आदेश हुआ। स+रु+स्कर्ता इस स्थिति में रु के उकार की इत्संज्ञा तथा लोप होकर सर्+स्कर्ता इस स्थिति में रु के पूर्ववर्ती अकार को **अत्रानुनासिक पूर्वस्य तु वा** से विकल्प से अनुनासिक हुआ। सँ+स्कर्ता इस स्थिति में खर् (स्कर्ता घटक सकार) के परे रहते पदान्त में विद्यमान सँ के रकार को **खरवसानयोर्विसर्जनीयः** से विसर्ग हुआ। सः+स्कर्ता इस स्थिति में **संपुङ्कानां सो वक्तव्यः** इस वार्तिक से सम् सम्बन्धी विसर्ग को सकार हुआ। सँस्+स्कर्ता इस स्थिति में वर्णसम्मेलन होकर सँस्स्कर्ता रूप सिद्ध हुआ। जिस पक्ष में **अत्रानुनासिकस्य पूर्वस्य तु वा** से रु से पूर्ववर्ण को अनुनासिक नहीं होता है, उस पक्ष में **अनुनासिकात् परोऽनुस्वारः** से रु से पूर्ववर्ण के बाद अनुस्वार का आगम होकर संस्स्कर्ता रूप बनता है।

सूत्र – पुमः खय्यम्परे(8.3.6)

वृत्ति – अम्परे खयि पुमो रुः।

सूत्रार्थ – अम् परक खय् परे रहते पुम् के मकार के स्थान पर रु आदेश होता है।

उदाहरण – पुँस्कोकिलः, पुंस्कोकिलः।

व्याख्या – यह रुविधायक विधिसूत्र है। इस सूत्र में तीन पद हैं। 'पुमः' षष्ठी एकवचन व 'खयि' और 'अम्परे' ये दोनों सप्तमी एकवचन के पद हैं। अम्परक खय् परे रहने से अभिप्राय है – ऐसा खय् परे हो जिसके बाद अम् हो। खय् प्रत्याहार में वर्ग के प्रथम तथा द्वितीय वर्ण आते हैं। अम् प्रत्याहार के अन्तर्गत स्वर वर्ण, अन्तस्थ वर्ण एवं वर्ग के पञ्चम अनुनासिक वर्ण आते हैं।

रूपसिद्धि –

पुँस्कोकिलः, पुंस्कोकिलः – पुम्+कोकिल इस स्थिति में कोकिल घटक आदि ककार खय् है एवं उससे परे अम् ककारोत्तरवर्ती ओकार है अतः इस अम् परक खय् के परे रहते **पुमः खय्यम्परे** से पुम् के अन्तिम मकार के स्थान पर रु आदेश हुआ। पु+रु+कोकिल इस स्थिति में रकारोत्तरवर्ती उकार की इत्संज्ञा एवं लोप होकर पुर्+कोकिल इस स्थिति में **अत्रानुनसिकस्य पूर्वस्य तु वा** सूत्र से रु से पूर्ववर्ण को विकल्प से अनुनासिक हुआ। पुँ+कोकिल इस स्थिति में कोकिल घटक आदि ककार खर् है अतः इस खर् के परे रहते **खरवसानयोर्विसर्जनीयः** से र् को विसर्ग हुआ। पुः+कोकिल इस स्थिति में **सम्पुङ्कानां सो वक्तव्यः** इस वार्तिक से पुम् सम्बन्धी विसर्ग को सकार हुआ। पुँस्+कोकिल इस स्थिति में वर्णसम्मेलन तथा स्वादिकार्य होकर पुँस्कोकिलः रूप सिद्ध हुआ। जिस पक्ष में अनुनासिक नहीं होता है, उस पक्ष में **अनुनासिकात् परोऽनुस्वारः** से अनुस्वार होकर पुंस्कोकिलः रूप बनता है।

सूत्र – नश्छव्यप्रशान्(8.3.7)

वृत्ति – अम्परे छवि नान्तस्य पदस्य रुः स्यात्। न तु प्रशान् शब्दस्य।

सूत्रार्थ – अम् परक छव् परे रहते पदान्त में जो नकार उसके स्थान पर रु आदेश होता है, प्रशान् शब्द को छोड़कर।

व्याख्या – यह रुविधायक विधिसूत्र है। इस सूत्र में तीन पद हैं। 'नः' षष्ठी एकवचन, 'छवि' सप्तमी एकवचन और 'अप्रशान्' यह द्वितीया बहुवचन का पद है। अम्परक छव् परे रहने का अभिप्राय है – ऐसा छव् परे हो जिसके बाद में अम् हो। छव् प्रत्याहार के अन्तर्गत छ्, ठ्, थ्, च्, ट् और त् ये वर्ण आते हैं।

सूत्र – विसर्जनीयस्य सः(8.3.34)

वृत्ति – खरि विसर्जनीयस्य सः स्यात्। अप्रशान् किम्? प्रशान्तनोति। पदस्येति किम् ? हन्ति।

सूत्रार्थ – खर् परे रहते विसर्ग के स्थान पर सकार आदेश होता है।

उदाहरण – चक्रिँस्त्रायस्व, चक्रिंस्त्रायस्व।

व्याख्या – यह सकारविधायक विधिसूत्र है। इस सूत्र में दो पद हैं। 'विसर्जनीयस्य' षष्ठी एकवचन तथा 'सः' यह प्रथमा एकवचन का पद है। **नश्छव्यप्रशान्** सूत्र में प्रशान् शब्द को छोड़कर कहने से प्रशान्+तनोति यहाँ पर नकार को रु नहीं होता है। पदान्त नकार को ही रु होता है ऐसा कहने से हन्ति आदि स्थलों में अपदान्त नकार के स्थान पर रु नहीं होता है।

रूपसिद्धि –

चक्रिँस्त्रायस्व, चक्रिंस्त्रायस्व – चक्रिन्+त्रायस्व इस स्थिति में त्रायस्व घटक तकार छव् है एवं उससे परे अम् है अतः अम् परक छव् परे रहते पदान्त में स्थित चक्रिन् घटक नकार के स्थान पर **नश्छव्यप्रशान्** सूत्र से रु आदेश हुआ। चक्रि+रु+त्रायस्व इस स्थिति में रेफोत्तरवर्ती उकार की इत्संज्ञा व लोप होकर चक्रिर्+त्रायस्व इस स्थिति में **अत्रानुनासिकस्य पूर्वस्य तु वा** से रु से पूर्ववर्ण को अनुनासिक हुआ। चक्रिँर्+त्रायस्व इस स्थिति में त्रायस्व घटक तकार रूपी खर् परे रहते **खरवसानयोर्विसर्जनीयः** से रेफ को विसर्ग हुआ। चक्रिः+त्रायस्व इस स्थिति में **विसर्जनीयस्य सः** से खर् परे रहते विसर्ग के स्थान पर सकारादेश हुआ। चक्रिँस्+त्रायस्व इस स्थिति में वर्णसम्मेलन होकर चक्रिँस्त्रायस्व रूप सिद्ध हुआ। जिस पक्ष में अनुनासिक नहीं होता, उस पक्ष में **अनुनासिकात् परोऽनुस्वारः** से रु से पूर्ववर्ण के बाद अनुस्वार का आगम होकर चक्रिंस्त्रायस्व रूप बनता है।

सूत्र –नॄन् पे(8.3.10)

वृत्ति – नॄनित्यस्य रुर्वा पे।

सूत्रार्थ – पकार परे रहते **नॄन्** शब्द के नकार के स्थान पर विकल्प से रु आदेश होता है।

व्याख्या – यह रुविधायक विधिसूत्र है। इस सूत्र में दो पद हैं। **नॄन्** यह लुप्तषष्ठ्यन्त पद और पे यह सप्तमी एकवचन का पद है। **नॄन्** के षष्ठ्यन्त होने के कारण **अलोऽन्त्यस्य** सूत्र की सहायता से अन्तिम नकार के स्थान पर आदेश होता है।

सूत्र – कुप्वोः ≍क≍पौ च (8.3.37)

वृत्ति –कवर्गे पवर्गे च विसर्गस्य ≍क≍पौ स्तः, चाद्विसर्गः।

सूत्रार्थ – कवर्ग और पवर्ग परे रहते विसर्ग के स्थान पर क्रमशः जिह्वामूलीय तथा उपध्मानीय होते हैं। सूत्र में चकार ग्रहण होने से पक्ष में विसर्ग भी रहता है।
उदाहरण – **नॄँ**पाहि, **नॄँ**:पाहि। **नॄं** पाहि, **नॄं**: पाहि। **नॄ**न्पाहि।

व्याख्या – यह जिह्वामूलीय तथा उपध्मानीय विधायक विधिसूत्र है। इस सूत्र में तीन पद हैं। कुप्वोः सप्तमी एकवचन का, ≍क≍पौ प्रथमा द्विवचन का और च यह अव्यय पद है। यह सूत्र **विसर्जनीयस्य सः**का अपवादशास्त्र है। सूत्र में चकार ग्रहण करने के कारण जिह्वामूलीय और उपध्मानीय के साथ-साथ पक्ष में विसर्ग भी होता है। यह कार्य विकल्प से सम्भव नहीं है, क्योंकि विकल्प होने पर पक्ष में विसर्ग को सकार हो जाता, जो कि इस प्रयोग में अनिष्ट है।

रूपसिद्धि –

नॄँ≍पाहि, नॄँ:पाहि। नॄं≍पाहि, नॄं:पाहि। नॄन्पाहि – **नॄन्**+पाहि इस स्थिति में पाहि घटक आदि पकार के परे रहते **नॄन् पे** सूत्र से **नॄन्** के अन्तिम नकार के स्थान पर विकल्प से रु आदेश हुआ। **नॄ**+रु+पाहि इस स्थिति में रेफोत्तरवर्ती उकार की इत्संज्ञा व लोप होकर **नॄ**+र्+पाहि इस स्थिति में **अत्रानुनासिकस्य पूर्वस्य तु वा**ऽसे रु सम्बन्धी रेफ से पूर्ववर्ण को विकल्प से अनुनासिक हुआ। **नॄँ**+र्+पाहि इस स्थिति में

खरवसानयोर्विसर्जनीयः से खर् (पाहि घटक) पकार के परे रहते रेफ के स्थान पर विसर्ग आदेश हुआ। **नँ**ः+पाहि इस स्थिति में **विसर्जनीयस्य सः** से विसर्ग के स्थान पर सकार प्राप्त है, जिसे बाधकर **कुप्वोः ≍क≍पौ च** सूत्र से पवर्गसम्बन्धी (पाहि घटक) पकार के परे रहते विसर्ग के स्थान पर उपध्मानीय आदेश होकर **नॄँ** ≍पाहि रूप सिद्ध हुआ। जिस पक्ष में विसर्ग को उपध्मानीय आदेश नहीं होता है, उस पक्ष में विसर्ग ही रह कर **नॄँ**ःपाहि रूप बनता है।

जिस पक्ष में रेफ से पूर्ववर्ण को अनुनासिक नहीं होता है, उस पक्ष में **अनुनासिकात् परोऽनुस्वारः** से अनुस्वार होकर उपध्मानीय सहित **नॄं**≍पाहि और विसर्ग सहित **नॄं**ःपाहि रूप बनता है।

जिस पक्ष में **नॄन् पे** इस सूत्र से (नॄन् के) नकार के स्थान पर रु आदेश नहीं होगा, उस पक्ष में **नॄन्**पाहि रूप बनेगा।

सूत्र – तस्य परमाम्रेडितम्(8.1.2)

वृत्ति – द्विरुक्तस्य परमाम्रेडितम् स्यात्।

सूत्रार्थ – जो दो बार कहा गया हो, उनमें द्वितीय (पर वाले) रूप की आम्रेडितसंज्ञा होती है।

व्याख्या – यह आम्रेडितसंज्ञाविधायक संज्ञासूत्र है। इस सूत्र में तीन पद हैं। 'तस्य' षष्ठी एकवचन तथा 'परम्' और 'आम्रेडितम्' ये दोनों प्रथमा एकवचन के पद हैं। जहाँ पर किसी वर्ण को द्वित्व हुआ हो तो उनमें पर वाले की आम्रेडितसंज्ञा होती है।

सूत्र – कानाम्रेडिते(8.3.12)

वृत्ति – कान्नकारस्य रुः स्यादाम्रेडिते।

सूत्रार्थ – आम्रेडितसंज्ञक शब्द परे रहते कान् शब्द के अन्तिम नकार के स्थान पर रु आदेश होता है।

उदाहरण – काँस्कान्, कांस्कान्।

व्याख्या – यह रुविधायक विधिसूत्र है। इस सूत्र में दो पद हैं। 'कान्' यह लुप्त षष्ठी एकवचन तथा आम्रेडिते यह सप्तमी एकवचन का पद है। रु इस पद की अनुवृत्ति आती है। यह सूत्र कान् के नकार के स्थान पर रु आदेश करता है।

रूपसिद्धि –

काँस्कान्, कांस्कान् – कान्+कान् इस स्थिति में यहाँ कान् को दो बार कहा गया है अतः **तस्य परमाम्रेडितम्** सूत्र से द्वितीय कान् की आम्रेडितसंज्ञा हुई। जिसके फलस्वरूप **कानाम्रेडिते** सूत्र से आम्रेडितसंज्ञक कान् के परे रहते पूर्ववर्ती कान् शब्द के अन्तिम नकार के स्थान पर रु आदेश हुआ। का+रु+कान् इस स्थिति में रेफोत्तरवर्ती उकार की इत्संज्ञा होने से लोप हुआ। का+र्+कान् इस स्थिति में **अत्रानुनासिकस्य पूर्वस्य तु वा** से रु से पूर्ववर्ण को अनुनासिक हुआ। काँ+र्+कान् इस स्थिति में कान् घटक ककाररूपी खर् परे रहते रेफ को **खरवसानयोर्विसर्जनीयः**

से विसर्ग हुआ। काँः+कान् इस स्थिति में **संपुङ्कानाम् सो वक्तव्यः** इस वार्तिक से खर् परे रहते विसर्ग के स्थान पर सकार आदेश हुआ। काँस्+कान् इस स्थिति में वर्णसम्मेलन होकर काँस्कान् रूप सिद्ध हुआ। जिस पक्ष में अनुनासिक नहीं होता, उस पक्ष में **अनुनासिकात् परोऽनुस्वारः** से रु से पूर्ववर्ण के बाद अनुस्वार का आगम होकर कांस्कान् रूप बनता है।

सूत्र – छे च(6.1.73)

वृत्ति – ह्रस्वस्य छे तुक्।

सूत्रार्थ – छकार परे रहते ह्रस्व को तुक् आगम होता है।

उदाहरण – शिवच्छाया।

व्याख्या – यह तुक् आगम विधायक विधिसूत्र है। इस सूत्र में दो पद हैं। 'छे' सप्तमी एकवचन तथा 'च' यह अव्यय पद है। तुक् के उकार एवं ककार की इत्संज्ञा व लोप होकर त् बचता है। ककार की इत्संज्ञा होने से त् कित् है अतः **आद्यन्तौ टकितौ** की सहायता से ह्रस्व के बाद होता है।

रूपसिद्धि –

शिवच्छाया – शिव+छाया इस स्थिति में शिव के अन्तिम ह्रस्व अकार से छाया घटक छकार परे रहते **आद्यन्तौ टकितौ** की सहायता से **छे च** से तुक् का आगम हुआ। शिव+तुक्+छाया इस स्थिति में उकार एवं तकार की इत्संज्ञा व लोप होकर शिव+त्+छाया इस स्थिति में **स्तोः श्चुना श्चुः** सूत्र प्राप्त है परन्तु **झलां जशोऽन्ते** इस सूत्र की दृष्टि में असिद्ध होने के कारण पहले **झलां जशोऽन्ते** से तकार के स्थान पर जश् दकार हुआ। शिव+द्+छाया इस स्थिति में **स्तोः श्चुना श्चुः** से छकार के परे रहते दकार को श्चुत्व जकार हुआ। शिव+ज्+छाया इस स्थिति में **खरि च** सूत्र से जकार को खर् परे रहते चर्त्व चकार हुआ। शिव+च्+छाया इस स्थिति में वर्णसम्मेलन तथा स्वादिकार्य होकर शिवच्छाया रूप सिद्ध हुआ।

सूत्र – पदान्ताद्वा(6.1.76)

वृत्ति – दीर्घात् पदान्तात् छे तुग्वा।

सूत्रार्थ – पदान्तदीर्घ से छकार परे रहते विकल्प से तुक् का आगम होता है।

उदाहरण – लक्ष्मीच्छाया, लक्ष्मीछाया।

व्याख्या – यह सूत्र तुक् आगम विधायक विधिसूत्र है। इस सूत्र में दो पद हैं। 'पदान्तात्' पञ्चमी एकवचन और 'वा' यह अव्यय पद है। छे, पदान्तात् और तुक् इन पदों की अनुवृत्ति आती है। पूर्वसूत्र से ह्रस्व को तुक् का आगम नित्य प्राप्त था, इस सूत्र से दीर्घ को विकल्प से तुक् आगम होगा।

रूपसिद्धि –

लक्ष्मीच्छाया, लक्ष्मीछाया – लक्ष्मी+छाया इस स्थिति में लक्ष्मी इस दीर्घान्त पद से छाया घटक छकार के परे रहते **पदान्ताद्वा** सूत्र से तुक् का आगम विकल्प से हुआ। लक्ष्मी+तुक्+छाया इस स्थिति में उकार एवं तकार की इत्संज्ञा व लोप होकर

लक्ष्मी+त्+छाया इस स्थिति में **स्तोः श्चुना श्चुः** सूत्र प्राप्त है परन्तु **झलां जशोऽन्ते** इस सूत्र की दृष्टि में असिद्ध होने के कारण **झलां जशोऽन्ते** से तकार के स्थान पर जश् दकार हुआ। लक्ष्मी+द्+छाया इस स्थिति में **स्तोः श्चुना श्चुः** सूत्र से छकार के परे रहते दकार को श्चुत्व जकार हुआ। लक्ष्मी+ज्+छाया इस स्थिति में **खरि च** से जकार को खर् परे रहते चर्त्व चकार हुआ। लक्ष्मी+च्+छाया इस स्थिति में वर्णसम्मेलन तथा स्वादिकार्य होकर लक्ष्मीच्छाया रूप सिद्ध हुआ। जिस पक्ष में तुक् आगम नहीं होता उस पक्ष में लक्ष्मीछाया रूप बनता है।

बोध प्रश्न

1. समुचित विकल्प का चयन कीजिए –

i. **मोऽनुस्वारः** यह सूत्र है –

(क) संज्ञासूत्र (ख) विधिसूत्र (ग) परिभाषासूत्र (घ) अधिकारसूत्र

ii. अनुस्वार के स्थान में परसवर्णविधायक सूत्र है –

(क) मोऽनुस्वारः (ख) नश्चापदान्तस्य झलि (ग) अनुस्वारस्य ययि परसवर्णः (घ) हे मपरे वा

iii. त्वङ्करोषि का वैकल्पिक रूप है?

(क) त्वं करोषि (ख) त्वञ्करोषि (ग) त्वम्करोषि (घ) त्वन्करोषि

iv. **नपरे नः** इस सूत्र का उदाहरण है –

(क) किन् ह्नुते (ख) किं ह्नुते (ग) दोनों (घ) इनमें से कोई नहीं

v. टित् आगम किसका अवयव होता है –

(क) अन्त का (ख) आदि का (ग) अन्त अच् का (घ) सभी का

2. सत्य अथवा असत्य कथन हेतु क्रमशः (√) या (×) चिह्न लगाएं –

i. **ड्ः सि धुट्** इस सूत्र का उदाहरण सुगण्ट् षष्ठः है –( )

ii. सुगण्ट् षष्ठः के तीन रूप सम्भव हैं –( )

iii. **तस्य परमाम्रेडितम्** यह संज्ञासूत्र है –( )

iv. सञ्छम्भुः का मात्र एक ही रूप बनता है –( )

v. ङम् का अभिप्राय ङ्, ण् और न् होता है –( )

3. समुचित उत्तर द्वारा रिक्त स्थान की पूर्ति कीजिए –

i. सम् के मकार के स्थान पर सुट् परे रहते .... आदेश होता है।

ii. सँस्स्कर्ता का द्वितीय रूप .... होता है।

iii. **आद्यन्तौ टकितौ** यह.......... सूत्र है।

iv. **कानाम्रेडिते** इस सूत्र का उदाहरण .... है।

v. दो बार कहे गये में......... का आम्रेडित संज्ञा होती है।

अभ्यास प्रश्न

1. **ङ्णोः कुक् टुक् शरि** सूत्रस्थपदों की सङ्ख्या एवं विभक्तियाँ बताइए।
2. **डः सि धुट्** इस सूत्र की कार्यविधि को सोदाहरण स्पष्ट कीजिए।
3. टित् और कित् से क्या अभिप्राय है? सोदाहरण स्पष्ट कीजिए।
4. **पुमः खय्यम्परे** इस सूत्र की व्याख्या कीजिए।
5. खर् प्रत्याहार में कौन-कौन से वर्ण आते हैं? बताइए।

7.3 सारांश

इस इकाई में आपने हल्सन्धि के **मोऽनुस्वारः**(8.3.23) सूत्र से लेकर **पदान्ताद्वा**(8.1.76) तक के सूत्रों का विधिवत् अध्ययन किया। प्रारम्भ में आपने पदान्त मकार को होने वाले परिवर्तनों को समझा। तत्पश्चात् अपदान्त नकार एवं मकार के स्थान पर होने वाले अनुस्वार आदेश को जाना। उसके बाद अनुस्वार को यय् परे रहते होने वाले परसवर्ण विधि का ज्ञान प्राप्त किया। पुनः पदान्त अनुस्वार के स्थान पर होने वाले वैकल्पिक परसवर्णविधि आदि को समझा। तत्पश्चात् मकार के स्थान पर होने वाले अनुनासिक यकार, वकार एवं लकार के स्थलों का भी अध्ययन किया। इसके बाद आगमों का क्रम प्रारम्भ हुआ। परिभाषासूत्रों की सहायता से आगम किसके अवयव एवं कहाँ पर होंगे, इसका भली-भाँति ज्ञान प्राप्त किया। आगमों में सर्वप्रथम शर् परे रहते ङकार और णकार को कुक् एवं टुक् का आगम करने वाले सूत्र एवं उनके उदाहरणों को जाना। उसके बाद डकार एवं नकार से परे सकार को विहित धुट् आगम को जाना। उसके बाद शकार के परे होने पर पदान्त नकार को होने वाले तुक् आगम को समझा। इस तुक् आगम के कारण सन्+शम्भुः के चार वैकल्पिक रूप किस प्रकार बने? इसका भी आपने विधिवत् अध्ययन किया। तत्पश्चात् ह्रस्व से परे जो ङम् यदि वह पदान्त में हो तो उससे परे अच् को होने ङमुट् (ङुट्, णुट् और नुट्) का सम्यक् प्रकार से अध्ययन किया। इसके बाद सम् अथवा पुम् आदि के मकार के स्थान पर होने वाले रु एवं उससे सम्बन्धित कार्यों को समझा। इसके बाद खर् अथवा अवसान परे होने पर रेफ के स्थान पर विसर्ग एवं कतिपय विशेष परिस्थितियों में उस विसर्ग के स्थान पर सकार, जिह्वामूलीय एवं उपध्मानीय आदि कार्यों से सम्बद्ध प्रक्रिया को जाना। अन्त में आम्रेडितसंज्ञा एवं तत्सम्बद्ध कार्यों तथा छकार को तुक् आगम आदि का भी हमने भली-भाँति अध्ययन किया।

7.4 शब्दावली

नित्य – **कृताकृतप्रसङ्गी नित्यः** – कोई सूत्र, जो किसी अन्य सूत्र के प्रवृत्ति से पूर्व भी लग सकता हो तथा प्रवृत्ति के बाद भी लग सकता हो या इस प्रकार कहें कि जो कार्य सदैव हो सकता हो, वह नित्य कहलाता है। सामान्यतः अष्टाध्यायी के सूत्रों में नित्य पद रख कर के आचार्य ने विकल्प का निषेध किया है।

अवसान – **विरामोऽवसानम्** अर्थात् वर्णों के अभाव को अवसान कहते हैं अर्थात् रामस् के अन्तिम वर्ण के बाद कोई वर्ण नहीं है अर्थात् वर्णों का अभाव है। वर्णों के इसी विराम या अभाव की अवसानसंज्ञा होती है।

आगम – आगम मित्र के समान होता है।

आम्रेडित – जो दो बार कहा गया हो, उनमें द्वितीय (पर वाले) रूप की आम्रेडित संज्ञा होती है।

7.5 कुछ उपयोगी पुस्तकें

वरदराजाचार्य, मूल लघुसिद्धान्तकौमुदी. गोरखपुर, गीताप्रेस.

वरदराजाचार्य, हिन्दी व्या॰ गोविन्दाचार्य. लघुसिद्धान्तकौमुदी. दिल्ली, चौखम्भा सुरभारती.

वरदराजाचार्य, हिन्दी व्या॰ शास्त्री, धरानन्द. लघुसिद्धान्तकौमुदी. दिल्ली, मोतीलाल बनारसी दास.

वरदराजाचार्य, हिन्दी व्या॰ शास्त्री, भीमसेन. लघुसिद्धान्तकौमुदी. (भाग–1–6), दिल्ली, भैमी प्रकाशन.

शास्त्री, चारुदेव. व्याकरण चन्द्रोदय. (भाग–1–3), दिल्ली, मोतीलाल बनारसीदास.

वरदराजाचार्य, सम्पा॰ एवं हिन्दी सिंह, सत्यपाल. लघुसिद्धान्तकौमुदी. दिल्ली, शिवालिक पब्लिकेशन.

Apte, V.S. ***The Students' Guide to Sanskrit Composition.*** Chowkhamba Sanskrit Series, Varanasi.

Kale, M.R. ***Higher Sanskrit Grammar*** .MLBD, Delhi.

Kanshi Ram, ***Laghusiddhantkaumudi***. (Vol. 1-3). MLBD. Delhi, 2009.

Ballantyne, James R. ***Laghusiddhantkaumudi***. Chowkhamba Sanskrit Series, Varanasi.

7.6 बोध/अभ्यास प्रश्नों के उत्तर

बोध प्रश्न

1. i. (ख) विधिसूत्र, ii. (ग) अनुस्वारस्य ययि परसवर्णः, iii. (क) त्वं करोषि, iv. (ग) दोनों, v. (ख) आदि का

2. i. असत्य, ii. सत्य, iii. सत्य, iv. असत्य, v. सत्य

3. i. रु, ii. संस्स्कर्ता, iii. परिभाषासूत्र, iv. कॉँस्कान्, v. द्वितीय

अभ्यास प्रश्न

इन प्रश्नों के उत्तर विद्यार्थी स्वयं लिखें।